



# Gopi Kishan ji joshi

28 Nov 1984

04:00 AM

Bikaner

Model: Web-MyKundli

Order No: 121696101

## सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग \_\_\_\_\_: पुल्लिंग  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_: 27-28/11/1984  
दिन \_\_\_\_\_: मंगल-बुधवार  
जन्म समय \_\_\_\_\_: 04:00:00 घंटे  
इष्ट \_\_\_\_\_: 52:10:37 घटी  
स्थान \_\_\_\_\_: Bikaner  
राज्य \_\_\_\_\_: Rajasthan  
देश \_\_\_\_\_: India

अक्षांश \_\_\_\_\_: 28:01:00 उत्तर  
रेखांश \_\_\_\_\_: 73:22:00 पूर्व  
मध्य रेखांश \_\_\_\_\_: 82:30:00 पूर्व  
स्थानिक संस्कार \_\_\_\_\_: -00:36:32 घंटे  
ग्रीष्म संस्कार \_\_\_\_\_: 00:00:00 घंटे  
स्थानिक समय \_\_\_\_\_: 03:23:28 घंटे  
वेलान्तर \_\_\_\_\_: 00:12:20 घंटे  
साम्पातिक काल \_\_\_\_\_: 07:51:32 घंटे  
सूर्योदय \_\_\_\_\_: 07:07:45 घंटे  
सूर्यास्त \_\_\_\_\_: 17:40:39 घंटे  
दिनमान \_\_\_\_\_: 10:32:54 घंटे  
सूर्य स्थिति(अयन) \_\_\_\_\_: दक्षिणायन  
सूर्य स्थिति(गोल) \_\_\_\_\_: दक्षिण  
ऋतु \_\_\_\_\_: हेमन्त  
सूर्य के अंश \_\_\_\_\_: 12:13:58 वृश्चिक  
लग्न के अंश \_\_\_\_\_: 00:55:54 तुला

#### अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति \_\_\_\_\_: तुला - शुक्र  
राशि-स्वामी \_\_\_\_\_: मकर - शनि  
नक्षत्र-चरण \_\_\_\_\_: श्रवण - 2  
नक्षत्र स्वामी \_\_\_\_\_: चन्द्र  
योग \_\_\_\_\_: ध्रुव  
करण \_\_\_\_\_: कौलव  
गण \_\_\_\_\_: देव  
योनि \_\_\_\_\_: वानर  
नाड़ी \_\_\_\_\_: अन्त्य  
वर्ण \_\_\_\_\_: वैश्य  
वश्य \_\_\_\_\_: जलचर  
वर्ग \_\_\_\_\_: मार्जार  
युँजा \_\_\_\_\_: अन्त्य  
हंसक \_\_\_\_\_: भूमि  
जन्म नामाक्षर \_\_\_\_\_: खू-खूबचन्द  
पाया(राशि-नक्षत्र) \_\_\_\_\_: लौह - ताम्र  
सूर्य राशि(पाश्चात्य) \_\_\_\_\_: धनु

### SHREE DAIVAGYA JYOTISH & VASTU

Raipur Chhattisgarh & Bikaner Rajasthan

9509496711

Pandit Bhawani Shankar Pareek

## पंचांग

दादा का नाम \_\_\_\_\_ :  
पिता का नाम \_\_\_\_\_ :  
माता का नाम \_\_\_\_\_ :  
जाति \_\_\_\_\_ :  
गोत्र \_\_\_\_\_ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1906	मार्गशीर्ष	7
पंजाबी	संवत : 2041	मार्गशीर्ष	14
बंगाली	सन् : 1391	मार्गशीर्ष	12
तमिल	संवत : 2041	कार्तिकगई	13
केरल	कोल्लम : 1160	वृश्चिकम	13
नेपाली	संवत : 2041	मार्गशीर्ष	13
चैत्रादि	संवत : 2041	मार्गशीर्ष	शुक्ल 6
कार्तिकादि	संवत : 2041	मार्गशीर्ष	शुक्ल 6

### पंचांग

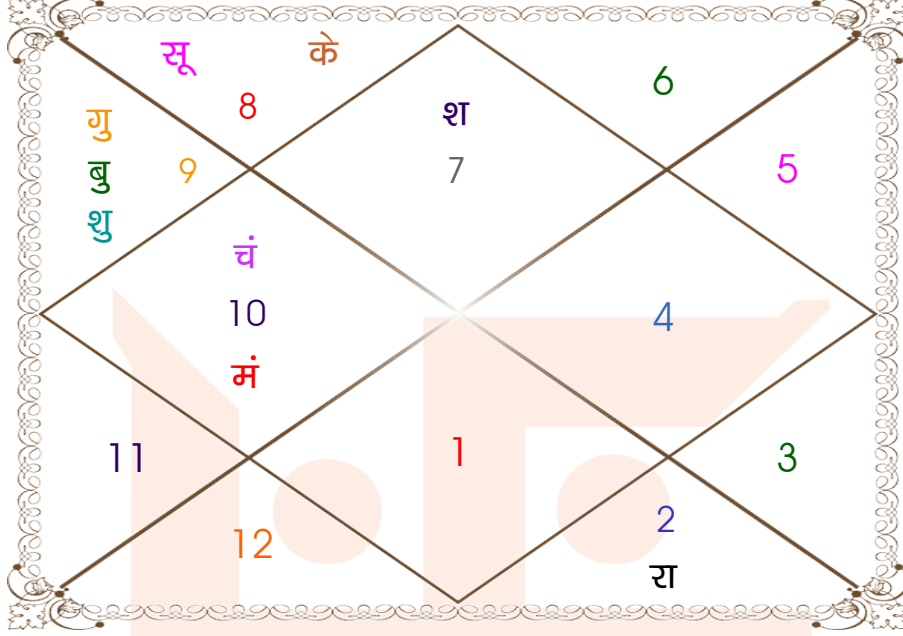
सूर्योदय कालीन तिथि \_\_\_\_\_ : 5  
तिथि समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 22:06:04  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_ : 6  
सूर्योदय कालीन नक्षत्र \_\_\_\_\_ : उत्तराषाढ़ा  
नक्षत्र समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 18:22:57 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : श्रवण  
सूर्योदय कालीन योग \_\_\_\_\_ : वृद्धि  
योग समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 26:48:40 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : ध्रुव  
सूर्योदय कालीन करण \_\_\_\_\_ : बव  
करण समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 09:57:20 घंटे  
जन्म करण \_\_\_\_\_ : कौलव  
भयात \_\_\_\_\_ : 24:02:38  
भभोग \_\_\_\_\_ : 63:15:12  
भोग्य दशा काल \_\_\_\_\_ : चंद्र 6 वर्ष 1 मा 29 दि

### घात चक्र

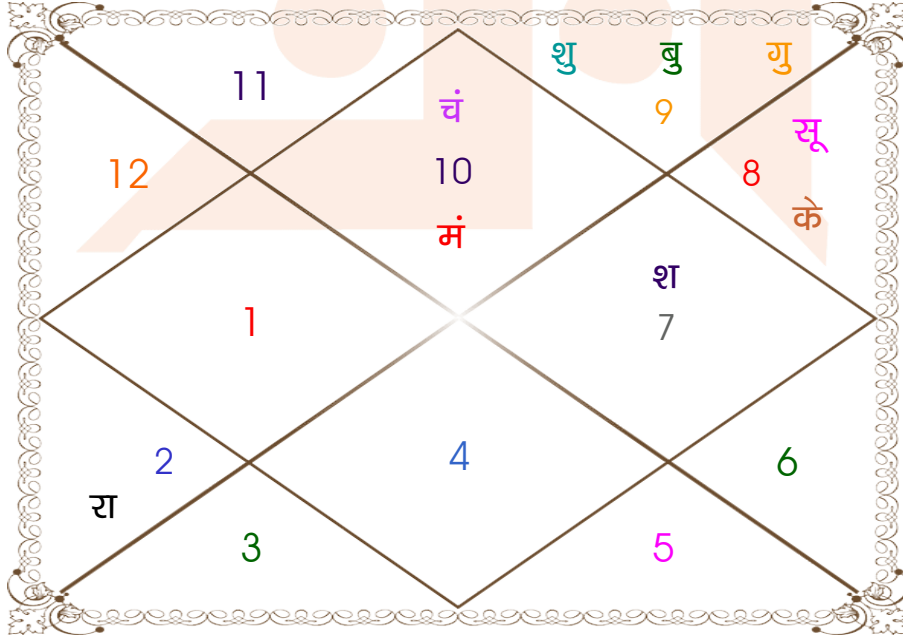
मास \_\_\_\_\_ : वैशाख  
तिथि \_\_\_\_\_ : 4-9-14  
दिन \_\_\_\_\_ : मंगलवार  
नक्षत्र \_\_\_\_\_ : रोहिणी  
योग \_\_\_\_\_ : वैधृति  
करण \_\_\_\_\_ : शकुनि  
प्रहर \_\_\_\_\_ : 4  
वर्ग \_\_\_\_\_ : मूषक  
लग्न \_\_\_\_\_ : कुम्भ  
सूर्य \_\_\_\_\_ : कुम्भ  
चन्द्र \_\_\_\_\_ : सिंह  
मंगल \_\_\_\_\_ : मीन  
बुध \_\_\_\_\_ : धनु  
गुरु \_\_\_\_\_ : मेष  
शुक्र \_\_\_\_\_ : वृष  
शनि \_\_\_\_\_ : मकर  
राहु \_\_\_\_\_ : मिथुन

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुण्डली



## चन्द्र कुण्डली



**SHREE DAIVAGYA JYOTISH & VASTU**

Raipur Chhattisgarh & Bikaner Rajasthan

9509496711

Pandit Bhawani Shankar Pareek

# लग्न कुण्डली और दशा

## लग्न कुंडली

		रा	
मं चं			
शु बु गु	के सू	श ल	

## लग्न कुंडली

रा			
		मं चं	
	ल श	बु गु शु	सू के

विंशोत्तरी  
चन्द्र 6वर्ष 1मा 29दि  
चन्द्र

28/11/1984

28/01/2101

चन्द्र	27/01/1991
मंगल	27/01/1998
राहु	28/01/2016
गुरु	28/01/2032
शनि	27/01/2051
बुध	28/01/2068
केतु	27/01/2075
शुक्र	27/01/2095
सूर्य	28/01/2101

योगिनी  
मंगला 0वर्ष 7मा 12दि  
धान्या

11/07/2023

11/07/2026

धान्या	11/10/2023
भ्रामरी	09/02/2024
भद्रिका	11/07/2024
उल्का	09/01/2025
सिद्धा	10/08/2025
संकटा	11/04/2026
मंगला	11/05/2026
पिंगला	11/07/2026

**SHREE DAIVAGYA JYOTISH & VASTU**

Raipur Chhattisgarh & Bikaner Rajasthan

9509496711

Pandit Bhawani Shankar Pareek

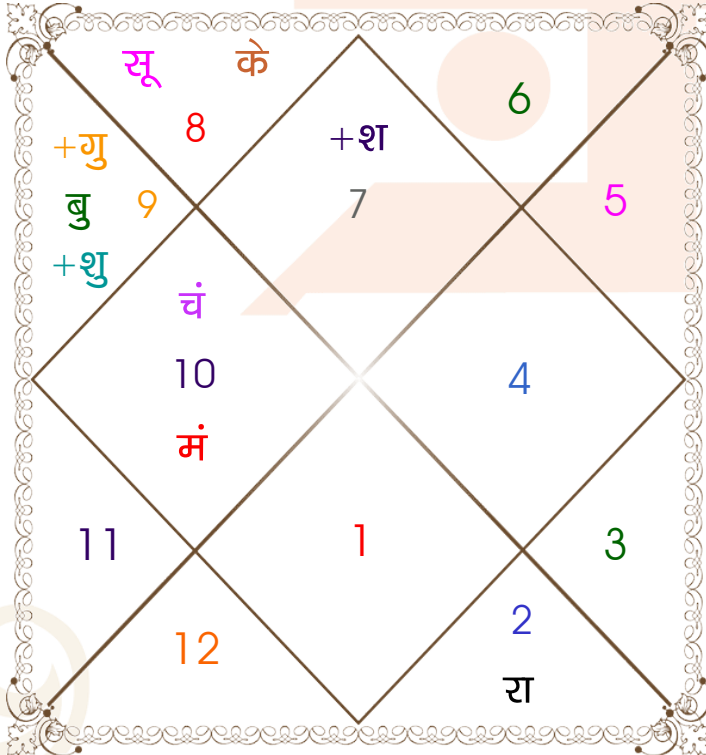
## ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			तुला	00:55:54	315:17:07	चित्रा	3	14	शुक्र	मंगल	बुध	---
सूर्य			वृश्चि	12:13:58	01:00:46	अनुराधा	3	17	मंगल	शनि	मंगल	मित्र राशि
चंद्र			मक	15:06:47	12:41:19	श्रवण	2	22	शनि	चंद्र	गुरु	सम राशि
मंगल			मक	15:31:49	00:45:26	श्रवण	2	22	शनि	चंद्र	गुरु	उच्च राशि
बुध			धनु	03:47:07	00:51:51	मूल	2	19	गुरु	केतु	चंद्र	सम राशि
गुरु			धनु	20:15:50	00:12:25	पूर्वाषाढा	3	20	गुरु	शुक्र	गुरु	स्वराशि
शुक्र			धनु	23:04:34	01:11:34	पूर्वाषाढा	3	20	गुरु	शुक्र	शनि	सम राशि
शनि			तुला	27:24:29	00:07:02	विशाखा	3	16	शुक्र	गुरु	शुक्र	उच्च राशि
राहु	व		वृष	03:45:06	00:00:53	कृतिका	3	3	शुक्र	सूर्य	शनि	मित्र राशि
केतु	व		वृश्चि	03:45:06	00:00:53	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	शनि	मित्र राशि
हर्ष			वृश्चि	19:40:27	00:03:39	ज्येष्ठा	1	18	मंगल	बुध	शुक्र	---
नेप			धनु	06:34:39	00:02:06	मूल	2	19	गुरु	केतु	राहु	---
प्लूटो			तुला	09:43:55	00:02:08	स्वाति	1	15	शुक्र	राहु	गुरु	---
दशम भाव			कर्क	02:14:55	--	पुनर्वसु	--	7	चंद्र	गुरु	राहु	--

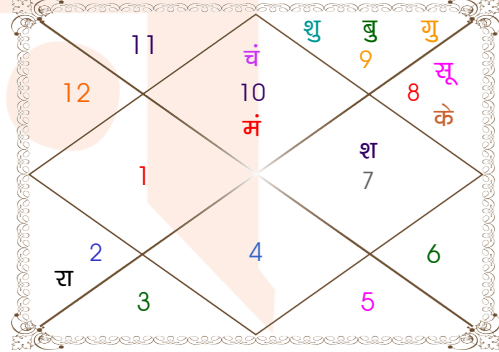
व - वकी स - स्थिर  
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त  
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:38:31

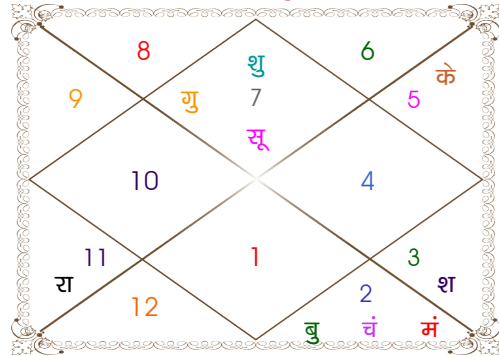
### लग्न-चलित



### चन्द्र कुंडली



### नवमांश कुंडली



SHREE DAIVAGYA JYOTISH & VASTU

Raipur Chhattisgarh & Bikaner Rajasthan

9509496711

Pandit Bhawani Shankar Pareek

## चलित तथा निरयण भाव चलित

### चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कन्या 16:09:04	तुला 00:55:54
2	तुला 16:09:04	वृश्चिक 01:22:14
3	वृश्चिक 16:35:24	धनु 01:48:35
4	धनु 17:01:45	मकर 02:14:55
5	मकर 17:01:45	कुम्भ 01:48:35
6	कुम्भ 16:35:24	मीन 01:22:14
7	मीन 16:09:04	मेष 00:55:54
8	मेष 16:09:04	वृष 01:22:14
9	वृष 16:35:24	मिथुन 01:48:35
10	मिथुन 17:01:45	कर्क 02:14:55
11	कर्क 17:01:45	सिंह 01:48:35
12	सिंह 16:35:24	कन्या 01:22:14

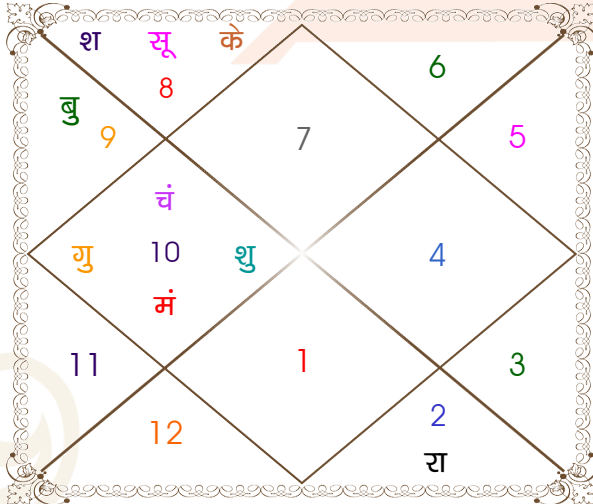
### निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	तुला	00:55:54
2	तुला	29:44:34
3	धनु	00:21:25
4	मकर	02:14:55
5	कुम्भ	04:15:46
6	मीन	04:21:22
7	मेष	00:55:54
8	मेष	29:44:34
9	मिथुन	00:21:25
10	कर्क	02:14:55
11	सिंह	04:15:46
12	कन्या	04:21:22

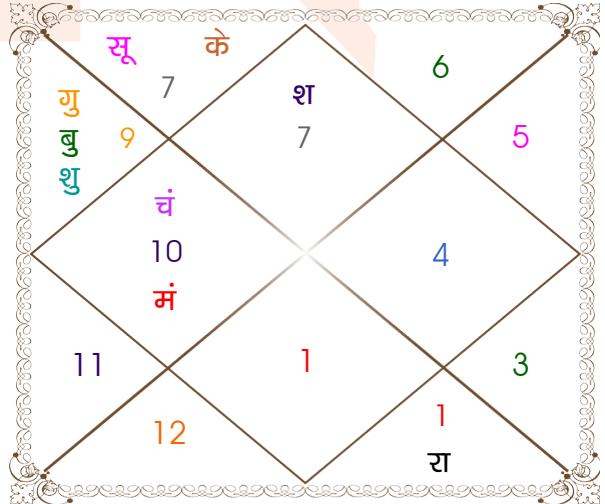
### तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा

### चलित कुंडली



### भाव कुंडली



## विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 6 वर्ष 1 मास 29 दिन

चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष
28/11/1984	27/01/1991	27/01/1998	28/01/2016	28/01/2032
27/01/1991	27/01/1998	28/01/2016	28/01/2032	27/01/2051
00/00/0000	मंगल 26/06/1991	राहु 09/10/2000	गुरु 17/03/2018	शनि 31/01/2035
00/00/0000	राहु 13/07/1992	गुरु 05/03/2003	शनि 27/09/2020	बुध 10/10/2037
28/11/1984	गुरु 19/06/1993	शनि 09/01/2006	बुध 03/01/2023	केतु 18/11/2038
गुरु 28/04/1985	शनि 29/07/1994	बुध 28/07/2008	केतु 10/12/2023	शुक्र 18/01/2042
शनि 28/11/1986	बुध 26/07/1995	केतु 16/08/2009	शुक्र 10/08/2026	सूर्य 31/12/2042
बुध 28/04/1988	केतु 22/12/1995	शुक्र 16/08/2012	सूर्य 29/05/2027	चंद्र 31/07/2044
केतु 27/11/1988	शुक्र 20/02/1997	सूर्य 10/07/2013	चंद्र 27/09/2028	मंगल 09/09/2045
शुक्र 29/07/1990	सूर्य 28/06/1997	चंद्र 09/01/2015	मंगल 03/09/2029	राहु 16/07/2048
सूर्य 27/01/1991	चंद्र 27/01/1998	मंगल 28/01/2016	राहु 28/01/2032	गुरु 27/01/2051

बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष
27/01/2051	28/01/2068	27/01/2075	27/01/2095	28/01/2101
28/01/2068	27/01/2075	27/01/2095	28/01/2101	00/00/0000
बुध 25/06/2053	केतु 25/06/2068	शुक्र 29/05/2078	सूर्य 17/05/2095	चंद्र 28/11/2101
केतु 22/06/2054	शुक्र 25/08/2069	सूर्य 29/05/2079	चंद्र 16/11/2095	मंगल 29/06/2102
शुक्र 22/04/2057	सूर्य 31/12/2069	चंद्र 27/01/2081	मंगल 23/03/2096	राहु 29/12/2103
सूर्य 27/02/2058	चंद्र 01/08/2070	मंगल 29/03/2082	राहु 14/02/2097	गुरु 29/11/2104
चंद्र 29/07/2059	मंगल 28/12/2070	राहु 29/03/2085	गुरु 03/12/2097	00/00/0000
मंगल 25/07/2060	राहु 16/01/2072	गुरु 28/11/2087	शनि 15/11/2098	00/00/0000
राहु 12/02/2063	गुरु 21/12/2072	शनि 27/01/2091	बुध 22/09/2099	00/00/0000
गुरु 20/05/2065	शनि 30/01/2074	बुध 27/11/2093	केतु 28/01/2100	00/00/0000
शनि 28/01/2068	बुध 27/01/2075	केतु 27/01/2095	शुक्र 28/01/2101	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल चंद्र 6 वर्ष 2 मा 12 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - शुक्र	गुरु - सूर्य	गुरु - चंद्र	गुरु - मंगल	गुरु - राहु
10/12/2023	10/08/2026	29/05/2027	27/09/2028	03/09/2029
10/08/2026	29/05/2027	27/09/2028	03/09/2029	28/01/2032
शुक्र 20/05/2024	सूर्य 25/08/2026	चंद्र 09/07/2027	मंगल 17/10/2028	राहु 13/01/2030
सूर्य 08/07/2024	चंद्र 18/09/2026	मंगल 06/08/2027	राहु 07/12/2028	गुरु 10/05/2030
चंद्र 27/09/2024	मंगल 05/10/2026	राहु 18/10/2027	गुरु 22/01/2029	शनि 25/09/2030
मंगल 23/11/2024	राहु 18/11/2026	गुरु 22/12/2027	शनि 17/03/2029	बुध 27/01/2031
राहु 18/04/2025	गुरु 27/12/2026	शनि 08/03/2028	बुध 04/05/2029	केतु 20/03/2031
गुरु 26/08/2025	शनि 11/02/2027	बुध 16/05/2028	केतु 24/05/2029	शुक्र 13/08/2031
शनि 27/01/2026	बुध 24/03/2027	केतु 14/06/2028	शुक्र 20/07/2029	सूर्य 26/09/2031
बुध 14/06/2026	केतु 11/04/2027	शुक्र 03/09/2028	सूर्य 06/08/2029	चंद्र 08/12/2031
केतु 10/08/2026	शुक्र 29/05/2027	सूर्य 27/09/2028	चंद्र 03/09/2029	मंगल 28/01/2032
शनि - शनि	शनि - बुध	शनि - केतु	शनि - शुक्र	शनि - सूर्य
28/01/2032	31/01/2035	10/10/2037	18/11/2038	18/01/2042
31/01/2035	10/10/2037	18/11/2038	18/01/2042	31/12/2042
शनि 20/07/2032	बुध 19/06/2035	केतु 02/11/2037	शुक्र 30/05/2039	सूर्य 04/02/2042
बुध 22/12/2032	केतु 15/08/2035	शुक्र 09/01/2038	सूर्य 27/07/2039	चंद्र 05/03/2042
केतु 24/02/2033	शुक्र 26/01/2036	सूर्य 29/01/2038	चंद्र 31/10/2039	मंगल 26/03/2042
शुक्र 27/08/2033	सूर्य 15/03/2036	चंद्र 04/03/2038	मंगल 07/01/2040	राहु 17/05/2042
सूर्य 21/10/2033	चंद्र 05/06/2036	मंगल 27/03/2038	राहु 28/06/2040	गुरु 02/07/2042
चंद्र 20/01/2034	मंगल 01/08/2036	राहु 27/05/2038	गुरु 30/11/2040	शनि 26/08/2042
मंगल 25/03/2034	राहु 27/12/2036	गुरु 20/07/2038	शनि 01/06/2041	बुध 14/10/2042
राहु 06/09/2034	गुरु 07/05/2037	शनि 22/09/2038	बुध 12/11/2041	केतु 03/11/2042
गुरु 31/01/2035	शनि 10/10/2037	बुध 18/11/2038	केतु 18/01/2042	शुक्र 31/12/2042
शनि - चंद्र	शनि - मंगल	शनि - राहु	शनि - गुरु	बुध - बुध
31/12/2042	31/07/2044	09/09/2045	16/07/2048	27/01/2051
31/07/2044	09/09/2045	16/07/2048	27/01/2051	25/06/2053
चंद्र 17/02/2043	मंगल 24/08/2044	राहु 12/02/2046	गुरु 17/11/2048	बुध 01/06/2051
मंगल 23/03/2043	राहु 24/10/2044	गुरु 01/07/2046	शनि 12/04/2049	केतु 22/07/2051
राहु 18/06/2043	गुरु 17/12/2044	शनि 13/12/2046	बुध 21/08/2049	शुक्र 16/12/2051
गुरु 03/09/2043	शनि 19/02/2045	बुध 09/05/2047	केतु 14/10/2049	सूर्य 29/01/2052
शनि 03/12/2043	बुध 17/04/2045	केतु 09/07/2047	शुक्र 17/03/2050	चंद्र 11/04/2052
बुध 23/02/2044	केतु 11/05/2045	शुक्र 30/12/2047	सूर्य 03/05/2050	मंगल 02/06/2052
केतु 28/03/2044	शुक्र 17/07/2045	सूर्य 20/02/2048	चंद्र 19/07/2050	राहु 12/10/2052
शुक्र 02/07/2044	सूर्य 06/08/2045	चंद्र 16/05/2048	मंगल 11/09/2050	गुरु 06/02/2053
सूर्य 31/07/2044	चंद्र 09/09/2045	मंगल 16/07/2048	राहु 27/01/2051	शनि 25/06/2053

## शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

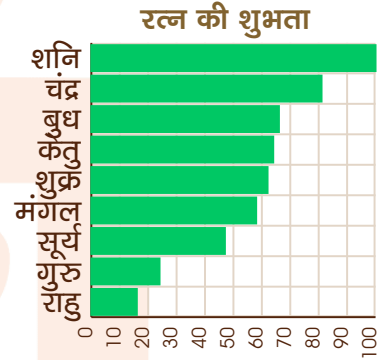
मूलांक	1
भाग्यांक	7
मित्र अंक	1, 4, 8, 9, 7
शत्रु अंक	3, 5, 6
शुभ वर्ष	19,28,37,46,55
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	कन्या, तुला
मित्र लग्न	मकर, मिथुन, सिंह
अनुकूल देवता	नृसिंह
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

## रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
नीलम	शनि	100%	स्वास्थ्य, सुख, सन्तति सुख
मोती	चंद्र	81%	सुख, व्यावसायिक उन्नति
पन्ना	बुध	66%	पराक्रम, भाग्योदय, कम खर्च
लहसुनिया	केतु	64%	धन, सुख
हीरा	शुक्र	62%	पराक्रम, दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य
मूंगा	मंगल	58%	सुख, दम्पति, धन
माणिक्य	सूर्य	47%	धन हानि, हानि
पुखराज	गुरु	24%	पराक्रम हानि, शत्रु व रोग
गोमेद	राहु	16%	दुर्घटना, पराक्रम हानि



### दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
चंद्र	27/01/1991	55%	94%	58%	72%	24%	62%	100%	0%	52%
मंगल	27/01/1998	55%	88%	70%	53%	37%	62%	100%	0%	70%
राहु	28/01/2016	22%	69%	41%	66%	24%	69%	100%	41%	52%
गुरु	28/01/2032	55%	88%	64%	53%	49%	50%	100%	16%	64%
शनि	27/01/2051	22%	69%	41%	72%	24%	69%	100%	28%	52%
बुध	28/01/2068	55%	69%	58%	78%	24%	69%	100%	16%	64%
केतु	27/01/2075	22%	69%	64%	66%	24%	69%	91%	0%	77%
शुक्र	27/01/2095	22%	69%	58%	72%	24%	75%	100%	28%	70%
सूर्य	28/01/2101	61%	88%	64%	66%	37%	50%	91%	0%	52%

## साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

### प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	17/12/1987-21/03/1990 20/06/1990-15/12/1990	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	21/03/1990-20/06/1990 15/12/1990-05/03/1993 15/10/1993-10/11/1993	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	05/03/1993-15/10/1993 10/11/1993-02/06/1995 10/08/1995-16/02/1996	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	17/04/1998-07/06/2000	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	01/11/2006-10/01/2007 16/07/2007-10/09/2009	-----

### द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	26/01/2017-21/06/2017 26/10/2017-24/01/2020	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	24/01/2020-29/04/2022 12/07/2022-17/01/2023	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	03/06/2027-20/10/2027 23/02/2028-08/08/2029 05/10/2029-17/04/2030	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	27/08/2036-22/10/2038 05/04/2039-13/07/2039	-----

### तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	08/12/2046-06/03/2049 10/07/2049-04/12/2049	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	06/03/2049-10/07/2049 04/12/2049-25/02/2052	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	13/10/2065-03/02/2066 03/07/2066-30/08/2068	-----

### शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	शुभ	पराक्रम
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	सुख
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	शुभ	सन्तति सुख
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	दाम्पत्य कलह
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	अल्प बचत

## साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।  
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

**ॐ शं शनैश्चराय नमः ।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

## मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।  
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

\*\*\*\*\*

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति चतुर्थ भाव में है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष है। इसके प्रभाव से जीवन में आपको भौतिक सुख संसाधनों तथा अन्य जायदाद आदि की प्राप्ति परिश्रम से होगी। शारीरिक रूप से आप स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे परन्तु स्वभाव में यदा कदा उग्रता का भाव उत्पन्न हो सकता है लेकिन दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। आपके विवाह में थोड़ा विलम्ब हो सकता है तथा वैवाहिक वार्ताओं में भी व्यवधान आ सकते हैं लेकिन अंततोगत्वा इसमें सफलता अवश्य प्राप्त होगी। आपकी पत्नी का शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा आपसी संबंधों में कुछेक क्षणों को छोड़कर मधुरता बनी रहेगी।

चतुर्थ भाव में मंगल की स्थिति के फलस्वरूप आपको सांसारिक सुख संसाधन परिश्रम पूर्वक प्राप्त होंगे साथ ही सप्तम भाव पर दृष्टि के प्रभाव से पत्नी के स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा आप दाम्पत्य जीवन का सुख पूर्वक उपभोग करने में समर्थ रहेंगे। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि के फलस्वरूप आप परिश्रम एवं पराक्रम से ही उच्च पद तथा सामाजिक मान सम्मान प्राप्त करेंगे। एकादश भाव पर दृष्टि के प्रभाव से आपके आय साधनों में सामान्यतया वृद्धि होगी। यदा कदा न्यूनता का भाव भी रहेगा लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं रहेगा तथा आपका सामान्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

मंगल के शुभ फलों में अधिक अनुकूलता के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए। जिससे आपका मांगलिक दोष भंग हो जाए। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इसके भंग होने से आप सर्वत्र सफलता के मार्ग पर

अग्रसर होंगे तथा सांसारिक सुख संसाधन ऐश्वर्य तथा वैभव की इच्छित प्राप्ति होगी तथा दाम्पत्य संबंधों में भी मधुरता का भाव विद्यमान रहेगा।



**SHREE DAIVAGYA JYOTISH & VASTU**

Raipur Chhattisgarh & Bikaner Rajasthan

9509496711

Pandit Bhawani Shankar Pareek

## कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।  
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

### काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

### जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में कर्कोटक नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक का पैतृक धन सम्पत्ति आंशिक रूप में नुकसान होता है। भाग्य उदय होने में थोड़ी बहुत रुकावट आती है परन्तु कालान्तर में वह व्यवधान स्वतः हट जाता है। व्यापार कार्य में विशेष रूप से परिश्रम करने पर लाभ मिलता है। नौकरी में थोड़ा बहुत व्यवधान उपस्थित होता है और यदि नौकरी मिल जाती है तो पदावनति होने का भय रहता है।

इस योग के प्रभाव से जातक को अपनी वाणी पर नियन्त्रण नहीं रहता और दूषित भी हो जाता है। जातक बात-बात पर लड़ाई झगड़े करने को तैयार हो जाता है। जातक को परिश्रम करने के बावजूद भी सही फल प्राप्त नहीं होता है। उधार में दिया हुआ द्रव्य प्रायः वापस नहीं आता है और जातक थोड़ा बहुत चिड़चिड़ा हो जाता है एवं कभी-कभी झंझट करने को भी तैयार हो जाता है तथा मानसिक परेशानी घेरे रहती है। कभी रोग व्याधि शरीर में लग जाती है और जातक को दुर्घटना का भय बना रहता है। आय की अपेक्षा व्यय अधिक होने के कारण आर्थिक स्थिति असामान्य हो जाती है। परन्तु विशेष परिश्रम करने पर आर्थिक स्थिति सामान्य हो जाती है।

इस योग के प्रभाव से जातक के अनेक शत्रु होते हैं। वे समय-समय पर षड्यन्त्र रचते रहते हैं, पर अपने कार्य में वे प्रायः सफल नहीं होते। जातक को अपने कुटुम्बियों से अपयश मिलता है एवं आत्मीय जन भी सम्मान नहीं देते हैं। अपने मित्रगणों के द्वारा छले जाते हैं। जिस कारण जातक को थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. 'ॐ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अद्वारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।

10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ॐ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड़्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

#### विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।

# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

### पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

### पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।**

**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

### **पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :**

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

### **आपकी कुण्डली में पितृदोष**

- नवम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में बुध के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों ।

## नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



## ग्रह फल

### सूर्य

द्वितीय भाव में सूर्य हो तो जातक भाग्यवान्, सम्पत्तिवान्, मुखरोगी, झगड़ालू, नेत्रकर्णदन्तरोगी, राजभीरु, घरेलू जीवन दुःखी एवं स्त्री के लिए कुटुम्बियों से झगड़ने वाला होता है।

वृश्चिक राशि में रवि हो तो जातक साहसी, लोभी, चिकित्सक, लोकमान्य, क्रोधी उद्योगी, उदररोगी, पुलिस अधिकारी एवं सेना में उच्चपद प्राप्त करने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वितीय भाव में है। अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा अल्प मात्रा में शारीरिक दुर्बलता की अनुभूति होती रहेगी। आपके प्रति उनका प्रेम भाव रहेगा तथा विद्यार्जन एवं धनार्जन संबंधी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही वे समय समय पर आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप भी उनका हार्दिक सम्मान तथा आदर करेंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी सेवा करने के लिए भी तत्पर रहेंगे। उनकी आज्ञा का पालन करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेद होने से विवाद आदि की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय पश्चात सब कुछ ही ठीक हो जाएगा।

### चन्द्र

चतुर्थभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सुखी, मानी, दानी, उदार, रोगरहित, राजद्वेषवर्जित, कृषक, विवाह के पश्चात् भाग्योदयी, जलजीवी एवं बुद्धिमान होता है।

मकर राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सदाचारी, पत्नी और सन्तान से प्रेम करने वाला, कवि, क्रोधी, लोभी, संगीतज्ञ, बात को शीघ्र समझने वाला एवं स्वार्थी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति चतुर्थ भाव में होने से माता का शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके प्रति उनका प्रगाढ़ स्नेह रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार की सुख सुविधाएं तथा अन्य सुखों को वे आपको प्रदान करेंगी। आपके मध्य मतभेद अल्प ही रहेंगे अतः परस्पर संबंध मधुर रहेंगे। साथ ही वाहनादि की प्राप्ति में भी वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी तथा कभी भी कोई कठिनाई का सामना नहीं करने देंगी।

आप भी उनका हमेशा हार्दिक सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा एवं निर्देशों को मानने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। साथ ही अपने जीवन काल में उनकी श्रद्धापूर्वक सेवा करेंगे तथा आवश्यक सुखसुविधाओं को भी प्रदान करेंगे। इस प्रकार आपके परस्पर संबंध मधुर एवं सुदृढ़ रहेंगे तथा जीवन को प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करेंगे।

## मंगल

चतुर्थभाव में मंगल हो तो जातक सन्ततिवान्, मातृसुखहीन, वाहनसुख, प्रवासी, अग्निभययुक्त, अल्पमृत्यु चा अपमृत्यु प्राप्त करने वाला, कृषक, बन्धुविरोधी एवं लाभ युक्त होता है।

मकर राशि में मंगल हो तो जातक ख्यातिप्राप्त, पराकमी, नेता ऐश्वर्यशाली, सुखी, सेनापति, उच्चपुलिस अधिकारी, प्रशासक, प्रचुर सन्तान, उदार, परिश्रमी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

आपके जन्म समय में मंगल तृतीय भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का आपको मध्यम सुख प्राप्त होगा। उनका स्वास्थ्य अच्छा होगा परन्तु यदा कदा शरीर से वे अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख में भी वे आपको आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आजीविका एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको उनका सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

आपके हृदय में भी उनके प्रति स्नेह का भाव विद्यमान रहेगा। आप के आपसी संबंध मधुर रहेंगे। परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने पर इसमें कटुता का भी वातावरण बनेगा लेकिन यह अस्थायी रहेगा। साथ ही सुख दुःख एवं समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में आप उन्हें अपना आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। इस प्रकार मिलजुल कर आप अपनी अधिकांश समस्याओं का समाधान करके प्रसन्नानुभूति प्राप्त करेंगे।

## बुध

तृतीयभाव में बुध हो तो जातक सद्गुणी, कार्यदक्ष, परिश्रमी, मित्रप्रेमी, भीरु, धर्मात्मा, यात्राशील, व्यवसायी, चंचल, अल्पभातृवान्, विलासी, सन्ततिवान्, कवि, सम्पादक, सामुद्रिकशास्त्र का ज्ञाता एवं लेखक होता है।

धनु राशि में बुध हो तो जातक विद्वान्, समाज में सम्मानित, गुणी, सुगठित शरीर, अविवेकी, अच्छा संगठनकर्ता, चतुर, ईमानदार, उदार, प्रसिद्ध, राजमान्य, लेखक, सम्पादक एवं वक्ता होता है।

## गुरु

तृतीयभाव में गुरु हो तो जातक शास्त्रज्ञ, जितेन्द्रिय, लेखक, कामी, प्रवासी, स्त्रीप्रिय, व्यवसायी, मन्दाग्नि, वाहनयुक्त, पर्यटनशील, विदेशप्रिय, ऐश्वर्यवान् बहुत भाई बहन, आस्तिक एवं योगी होता है।

धनु राशि में गुरु हो तो जातक धनी, प्रभावशाली, विद्वान्, विश्वस्त, सज्जन, दानशील संगठनकर्ता, अच्छा वक्ता, धर्माचार्य, दम्भी, रतिप्रेमी एवं धूर्त होता है।

## शुक्र

तृतीय भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, कलाकार, आलसी, कृपण, धनी, सुखी, पराकमी, भाग्यवान्, बहने भाईयों से अधिक एवं पर्यटनशील होता है।

धनु राशि में शुक्र हो तो जातक धनी, बलशाली, स्वोपार्जित द्रव्य द्वारा पुण्य करने वाला, विद्वान्, सुन्दर, लोकमान्य, राज्यमान्य, सुखी घरेलू जीवन, उच्चपद की प्राप्ति एवं प्रभावशाली होता है।

## शनि

लग्न (प्रथम) में शनि मकर, कुम्भ तथा तुला का हो तो धनाढ्य, सुखी, धनु और मीन राशियों में हो तो अत्यन्त धनवान् और सम्मानित एवं अन्य राशियों का हो तो अशुभ होता है।

तुला राशि में शनि हो तो जातक राजनीति में रुचि रखने वाला, प्रसिद्धनेता, धनी, सम्मानित शक्तिशाली, दानशील, परस्त्रियों में रुचि, सुभाषी, यशस्वी, स्वाभिमानी एवं उन्नतिशील होता है।

## राहु

अष्टम भाव में राहु हो तो जातक क्रोधी, व्यर्थभाषी, मूर्ख, उदररोगी, कामी, पुष्टदेही एवं गुप्तरोगी होता है।

वृष राशि में राहु हो तो जातक सुखी, चंचल, कुरुप, आवेशपूर्ण स्वभाव एवं धनी होता है।

## केतु

द्वितीय भाव में केतु हो तो जातक अस्वस्था, कटुवचन बोलने वाला, मुंह के रोग, राजभीरु एवं विद्रोही होता है।

वृश्चिक राशि में केतु हो तो जातक धूर्त, वाचाल, कुष्ठरोगी, क्रोधी निर्धन एवं व्यसनी होता है।

## दशा विश्लेषण

**महादशा :- गुरु  
( 28/01/2016 - 28/01/2032 )**

आपकी जन्मकुण्डली में गुरु की महादशा 28/01/2016 को आरम्भ और 28/01/2032 को समाप्त होगी। इसकी अवधि सोलह वर्ष है।

आपकी जन्मकुण्डली में गुरु तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मानसिक अभिरुचि, बुद्धि, साहस, दृढ़ता, छोटे भाई-बहन, छोटी यात्रा, वाहन, बॉण्ड, गले, कन्धे, हँसली तथा स्नायु-तंत्र का द्योतक है। गुरु स्वभाव से एक शुभग्रह है। आपकी जन्मकुण्डली में तृतीय भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि सातवें, नवें और ग्यारहवें भाव पर है और यह उक्त भावों के कार्यों को प्रभावित कर रहा है। अतः सोलह वर्षों की यह दशा आपके लिए शान्तिपूर्ण, समृद्धि दायक तथा स्वास्थ्यप्रद होगी।

**स्वास्थ्य :**

साहस, पराक्रम तथा शक्ति के तृतीय भाव में स्थित महादशा स्वामी गुरु के कारण आपको शक्ति मिलेगी और आप हर तरह की कठिन परीक्षा का सामना साहसपूर्वक करेंगे। आपको कोई गम्भीर बीमारी नहीं होगी और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

**धन-सम्पत्ति :**

तृतीय भाव में स्थित गुरु की दृष्टि ग्यारहवें भाव (नवें और सातवें भाव के अतिरिक्त) पर है। ग्यारहवाँ भाव लाभ का भाव है इसलिए आपको धन-सम्पत्ति में वृद्धि के अवसर मिलेंगे। इस दशा के दौरान आप अपनी आय के स्रोतों और चल-अचल सम्पत्ति में वृद्धि करने में सक्षम होंगे।

**व्यवसाय :**

तृतीय भाव में स्थित ज्ञान और शिक्षा के कारक गुरु की (सातवें भाव के अतिरिक्त) ग्यारहवें तथा नवें भावों पर दृष्टि है। फलतः आपकी प्रवृत्ति साहित्यिक क्षेत्र की ओर होगी। आप लेखक या उपन्यासकार और एक साहित्यिक व्यक्ति हो सकते हैं। आप हर क्षेत्र में प्रगति करेंगे और भाई-बहनों तथा अन्य सहयोगियों, संबंधियों के सहयोग के फलस्वरूप आपको पर्याप्त लाभ मिलेगा।

**पारिवारिक जीवन :**

तृतीय भाव में स्थित गुरु की (नवें तथा ग्यारहवें भावों के अतिरिक्त) सातवें भाव पर दृष्टि है। सातवाँ भाव जीवनसाथी का भाव है। इसलिए आपके जीवनसाथी बहुत सहयोगी होंगे। इस दशा के दौरान आपका पारिवारिक जीवन सद्भावपूर्ण तथा अनुकूल होगा। आपके बच्चे तथा छोटे भाई-बहन आपके आज़ाकारी होंगे।

**अंतर्दशा :- गुरु - शुक्र**  
**( 10/12/2023 - 10/08/2026 )**

आपके लिए बृहस्पति महादशा 28/01/2016 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा शुक्र की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 10/12/2023 को प्रारंभ होकर 10/08/2026 के समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, सुख और कला का कारक है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे; सब इच्छाएं आसानी से पूर्ण होंगी। किस्मत साथ देगी। उत्साह से पूर्ण रहेंगे; लोकप्रिय बनेंगे। कला में रुचि लेंगे। सुखकारी लघुयात्राएं हो सकती हैं। उत्तम मित्रों की संगति होगी। सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। दान-धर्म में रुचि होगी। लेखन, प्रकाशन और साहित्य से लाभ हो सकता है। जीवन में सुख-शांति रहेगी।

आपके जीवनसाथी की यात्राएं हो सकती हैं। आपके पिता को साझेदारी से लाभ होगा। माता के खर्चे बढ़ सकते हैं। आपके भाई-बहनों के लिए आमोद-प्रमोद, निवेश से लाभ, पारिवारिक सुख, उत्तम शिक्षा का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे ; सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी।

अगर आप सेवारत हैं तो लोकप्रिय, सफल, प्रसिद्ध बनेंगे, सम्मान होगा। परामर्शदाताओं को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। व्यापारी धनी बनेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कान और नेत्र की मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र मंत्र का जाप करें।

ॐ शुं शुक्राय नमः

**अंतर्दशा :- गुरु - सूर्य**  
**( 10/08/2026 - 29/05/2027 )**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 28/01/2016 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 9 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 10/08/2026 को प्रारंभ होकर 29/05/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, पिता, कार्यक्षमता और स्वास्थ्य का कारक है।

यह अंतर्दशा आपके लिए बहुत भाग्यशाली रहेगी, खास तौर पर आर्थिक मामलों में समय बहुत अच्छा रहेगा। आपकी शिक्षा-दीक्षा उत्तम रहेगी। व्यक्तित्व प्रभावशाली रहेगा। विरोधियों पर विजय होगी। अपने परिश्रम से धन कमाएंगे। साझेदार, वसीयत, बीमा, ग्रेच्युटी आदि से धनलाभ हो सकता है। तंत्र-मंत्र में रुचि हो सकती है। अप्रत्याशित धनलाभ हो सकता है, कुछ परिवर्तन हो सकता है। पुरखों की जायदाद मिल सकती है।

आपके जीवनसाथी को साझेदारी से लाभ हो सकता है। आपके पिता धनी होंगे,

**SHREE DAIVAGYA JYOTISH & VASTU**

Raipur Chhattisgarh & Bikaner Rajasthan

9509496711

Pandit Bhawani Shankar Pareek

उच्चपद प्राप्त करेंगे। माता धनी होंगी, सफलता प्राप्त करेगी, संतान से संबंध उत्तम होंगे। आपके भाई-बहनों के लिए यात्रा और सफलता का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, हर काम में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यक्षेत्र में सफल होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो यात्रा हो सकती है, भाग्य साथ देगा, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं को कई माध्यमों से लाभ होगा। व्यापारी अपने व्यापार में कुछ लाभकारी परिवर्तन करेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। नेत्र और मुख की व्याधियों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए गेहूं, गुड़ और तांबा दान करें।

**अंतर्दशा :- गुरु - चन्द्र  
( 29/05/2027 - 27/09/2028 )**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 28/01/2016 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 4 मास है। आपके लिए यह 29/05/2027 को आरंभ होकर 27/09/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र सुंदरता, स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य और भावनाओं का कारक है।

इस अवधि में आपके परिवार में हंसी-खुशी का वातावरण रहेगा। माता से संबंध उत्तम रहेंगे। शिक्षा उत्तम होगी और परीक्षा में सफलता मिलेगी। अचल संपत्ति, भूमि आदि से लाभ हो सकता है। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। परिवार से संबंध भावनापूर्ण रहेंगे। कार्यों के लिए प्रशंसा होगी। सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। समाज की भलाई का कार्य करेंगे। प्रसिद्धि मिलेगी। आपके जीवनसाथी सफल, प्रसिद्ध और धनी होंगे। आपके पिता को अप्रत्याशित धन मिल सकता है; वसीयत से लाभ हो सकता है। माता के पास सुख-साधन होंगे, प्रसन्न रहेंगी, धनी बनेंगी, बहुत से मित्र होंगे। आपके भाई-बहनों के लिए धन, सुख-साधन, उत्तम शिक्षा, मृदु वाणी के कारण प्रशंसा का संकेत है।

आपकी संतान का मन भटक सकता है; अच्छा होगा अगर वे कार्य में ज्यादा परिवर्तन न करें, कृतसंकल्प रहें। अगर वे कार्यरत हैं तो खर्चे बढ़ेंगे, बाधाएं आ सकती हैं। विदेश यात्रा हो सकती है।

अगर आप सेवारत हैं तो लाभ में वृद्धि होगी, सहकर्मि सहयोग करेंगे, कार्यालय उत्तम होगा। परामर्शदाताओं को साझेदारी से लाभ होगा, यात्रा हो सकती है, सफल रहेंगे। व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मनोभावनाओं में उतार-चढ़ाव से बचें। शुभत्व में वृद्धि के लिए दूध का दान करें।

**अंतर्दशा :- गुरु - मंगल  
( 27/09/2028 - 03/09/2029 )**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 28/01/2016 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में आठवीं अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 27/09/2028 को प्रारंभ होकर वद 03/09/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, शौर्य और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आप अचल संपत्ति प्राप्त करेंगे। शिक्षा उत्तम होगी। अप्रिय घटनाओं से बचें। विवाहित जीवन में कुछ तनाव हो सकता है। स्पर्धियों पर विजय होगी। प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। तकनीकी विषयों और कृषि विज्ञान में दक्षता प्राप्त कर सकते हैं।

मंगल की 11वें भाव पर दृष्टि के कारण आप धनी और सफल बनेंगे। प्रभाव में वृद्धि होगी; प्रत्येक कार्य निपुणता से करेंगे। मष्तिष्क लक्ष्य की ओर उन्मुख रहेगा।

आपके जीवनसाथी सफल होंगे; स्पर्धियों पर विजयी रहेंगे। आपके पिता के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है। माता सफल रहेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए धन, उत्तम शिक्षा, प्रसिद्धि, स्पर्धियों पर विजय का संकेत है।

आपकी संतान को लक्ष्य प्राप्ति के लिए परिश्रम करना होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो परिवर्तन हो सकता है, खर्च बढ़ेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो धनार्जन उत्तम होगा, आकांक्षाएं पूर्ण होंगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं को साझेदारी से लाभ होगा। व्यापारी खूब धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा। हृदय और छाती के रोगों से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए मंगल के मंत्र का जाप करें।

ॐ अं अंगारकाय नमः

**अंतर्दशा :- गुरु - राहु  
( 03/09/2029 - 28/01/2032 )**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 28/01/2016 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में नवीं अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 4 मास 24 दिन है। यह 03/09/2029 को प्रारंभ होकर 28/01/2032 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक सुख, अचानक परिवर्तन और विदेशियों का कारक है।

इस अवधि में आपको जीवनसाथी या साझेदार के माध्यम से धनलाभ होगा। सट्टेबाजी आदि से अचानक अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। तंत्र-मंत्र में रुचि हो सकती है। अध्यात्म में मन लगेगा। दूरस्थ स्थान की यात्रा हो सकती है। भौतिक सुख-साधन प्राप्त करने की इच्छा पूर्ण होगी। प्रभावशाली व्यक्तियों के संपर्क में आएंगे; उनसे लाभ होगा। धन की कमी से बचने के लिए धन का सुनियोजित उपयोग आवश्यक है।

आपके जीवनसाथी के धन में वृद्धि होगी। आपके पिता के खर्चे बढ़ सकते हैं। माता को निवेश से लाभ होगा और संतान से सुख मिलेगा। आपके भाई-बहनों के लिए शत्रुओं और स्पर्धियों पर विजय, कार्यक्षेत्र में सफलता, धन, लंबी यात्रा और समाजसेवा का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, घर में सुख मिलेगा। अगर वे कार्यरत हैं तो अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो धनार्जन उत्तम होगा। परामर्शदाताओं की आय बढ़ेगी। व्यापारियों को हर प्रकार से धनलाभ होगा।

मामूली व्याधियों को अनदेखा न करें। अरिष्ट से बचाव के लिए नीले वस्त्र, उड़द और सतनजा दान दें।

